देवपूजाउपचारांगभूत पाद्यादि स्नानान्त वर्णन

।। पाद्यवर्णन ।।

पैर (प्रक्षालन) के निमित्त जो केवल जल, दिया जाता है, उसे पाद्य कहते हैं। इसे धातु के पात्र या शङ्ख से प्रदान करे। पाद्य, धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष का संस्थान बताया गया है। उसे सब जगह, आसन-दान के पश्चात् मूलमन्त्र से प्रदान करना चाहिये -

पादार्थमुदकं पाद्यं केवलं तोयमेव तत्।

तत् तैजसेन पात्रेण शङ्खेनापि प्रदापयेत् ।।

धर्मार्थकाममोक्षाणां संस्थानं पाद्यमिष्यते ।

तदासनोत्तरं दद्यान्मूलमन्त्रेण सर्वतः ।।(का०पु०६८/३९-४०)

।। अर्घ्यवर्णन ।।

साधक यथोपलब्ध कुश, पुष्प, अक्षत, चन्दन, गन्ध (सुगन्धित पदार्थ) और जल से, सिद्धि की कामना सहित अर्घ्यप्रदान करे । अर्घ्य से कामनायें प्राप्त होती हैं । अर्घ्य से धनप्राप्त होता है । अर्घ्यदान से ही पुत्र, आयु, सुख या

मोक्षप्राप्त होता है । बुद्धिमान् साधक, शङ्खस्थितजल, सूर्य को तथा सीपी का जल, विष्णु को अर्घ्य के रूप में प्रदान न करे-

कुशपुष्पाक्षतैश्चैव सिद्धार्थश्चन्दनैस्तथा ।

तोयैर्गन्धैर्यथालब्धैरर्घ्यं दद्यात् तु सिद्धये ।।

अर्घ्येण लभते कामानर्घ्येण लभते धनम् ।

पुत्रायुःसुखमोक्षाणि दानादर्घ्यस्य वै लभेत् ।।

न दद्याद् भास्करायार्घ्यं शङ्खतोयैर्विचक्षणः ।

तथा न शुक्तिपात्रेण विष्णवेऽर्घ्यं निवेदयेत् ।। (का०पु०६८/४१-४३)

।। आचमनीयवर्णन ।।

शुभ, सुगन्धितजल, कर्पूर से सुगन्धित तथा कालेअगर से धूपित यथोपलब्ध सुगन्ध से युक्त, फेन से रहित, जल को, धातु के पात्र या शङ्खपात्र में लेकर आचमनीय प्रदान करे। जो प्रसन्न (स्वच्छ), फेन रहित, जल, देवताओं के आचमन हेतु दिया जाता है, उसे आचमनीय कहते हैं । यदि उपलब्ध हो तो सुगन्ध आदि से सुगन्धित जल से आचमनीय अथवा केवल बिना कुछ उसमें मिलाये जलमात्र से ही आचमनीय प्रदान करे । आचमनीयप्रदान कर के साधक, आयु, बल, यश की वृद्धि और अभिलषित कामनाओं को नित्य प्राप्त करता है-

दद्यादाचमनीयं तु सुगन्धिसलिलैः शुभैः ।

कर्पूरवासितैर्वापि कृष्णागुरुविधूपितैः ।।

यथा तथा सुगन्धैर्वा प्रसङ्गैः फेनवर्जितैः ।

तत् तैजसेन पात्रेण शंखेनापि प्रदापयेत् ।।

उदकं दीयते यत् तु प्रसन्नं फेनवर्जितम् ।

आचमनाय देवेभ्यस्तदाचमनमुच्यते ।।

केवलं तोयमात्रेण तद् वा दद्यान्न मिश्रितम् ।

वासितं तु सुगन्धाद्यैः कर्तव्यं यदि लभ्यते ।।

आयुर्बलं यशोवृद्धिं प्रदायाचमनीयकम् ।

लभते साधको नित्यं कामांश्चैव यथोत्थितान् ।।(का०पु०६८/४४-४८)

।। मधुपर्कवर्णन ।।

दधि, घी, जल, मधु, मिश्री इन पाँच पदार्थों से युक्त पदार्थ, मधुपर्क कहा जाता है । वह सभी देवसमूह को तृप्तिप्रदान करने वाला है । मधुपर्क बनाने में जल सबसे कम, मिश्री, दही, घी समानमात्रा में तथा शहद का सर्वाधिक प्रयोग करना चाहिये । वह मधुपर्क, सोना, शंख या काँसे के पात्र में ज्योतिष्टोम, अश्वमेध आदि यज्ञ में तथा अपने इष्टदेव के पूजन में प्रदान करे । ऊपर इस प्रकार का वर्णित, मधुपर्क सभी देवसमूह को तुष्टि देने वाला तथा धर्म- अर्थ-काम-मोक्ष का साधक कहा गया है। यह सौख्य, भोग्य, तुष्टि व पुष्टि प्रदान करने वाला है ।।

दधिसर्पिर्जलं क्षौद्रं सिता ताभिश्च पञ्चभिः ।

प्रोच्यते मधुपर्कस्तु सर्वदेवौघतुष्टये ।।

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

जलं तु सर्वतः स्वल्पं सितादधिघृतं समम् ।

सर्वेभ्यश्चाधिक क्षौद्रं मधुपर्के प्रयोजयेत् ।।

तद् दद्यात् कांस्यपात्रेण रौक्मश्वेतमयेन वा ।

ज्योतिष्टोमाश्वमेधादौ पूर्वे चेष्टे च पूजने ।।

मधुपर्कः प्रदिष्टोऽयं सर्वदेवौघतुष्टिदः ।।

धर्मार्थकाममोक्षाणां साधकः परिकीर्तितः ।

मधुपर्कः सौख्यभोग्य-तुष्टि-पुष्टि-प्रदायकः ।।का०पु०६८/४९-५३)

।। स्नानीयवर्णन ।।

कल्प (पूजा विधि) जानने वालों द्वारा सुगन्धयुक्तचूर्ण, कस्तूरी, गोरोचन, कुङ्कुम, गुड़, मधु, पञ्चगव्य, सर्वौषधि, मिश्री, निर्णेजन (साबुन), तेल, स्निग्ध स्नेहयुक्त तिल, अन्त में जल इन के मिश्रण को स्नानीय कहा जाता है । स्वर्ण और रत्नयुक्तजल, कपूर से सुगन्धित स्नानीयजल को धातु, काँसा, या शङ्ख के पात्र में निवेदित करे। स्नानीयपदार्थ, मण्डल में पद्म के केशर पर, सूर्य की प्रतिमा पर, शिव के लिङ्ग पर, भोग (सर्प) की पीठ पर तथा देवता के शरीर पर देना चाहिये । अत्यन्त कोमल, मिट्टी की बनी, घी और सिन्दूर से बनी, श्रीचन्दन पर प्रतिष्ठित प्रतिमा के शरीर पर स्नानीय का लेप करना चाहिये किन्तु स्वास्तिक पर स्थापित होने पर, खड्ग पर, दर्पण पर स्नान कराना चाहिये। इस प्रकार से सूर्य, विष्णु, शिव आदि को या जहाँ कहीं पूजन करना हो विशेष कर महादेवी को, स्नानीय प्रदान करे । उपर्युक्त रीति से स्नान कराने से पूजक, चिरायु होता है तथा विधिपूर्वक स्नान-दान से वह कल्पपर्यन्त स्वर्ग-

सुख का भोग करता है । पाद्य-गन्ध-धूप-दीप आदि सभी उपचारों का अर्घ्य-पात्र के अमृतीकरण आदि द्वारा संस्कारितजल से अभिषेक कर, इष्टदेवता को अर्पित करे तो देवता उसे स्वयं ग्रहण करते हैं। अर्घ्यपात्र से उन जलों की व्यवस्था किये बिना जो इष्टदेव को निवेदन किया जाता है, वह सब निष्फल होता है; क्योंकि राग से लोभ से या आलस्यवश अर्घ्य पात्र का अमृतीकृतजल यदि, पात्र से बह जाय तो पुनः अमृतीकरण करे। अमृतीकरणयुक्तपात्र में बचे हुये थोड़े से भी जल में अन्यजल डालकर समर्पित करे तो उसका उसी से अमृतीकरण हो जाता है । यदि बहुत पुष्प या मालाएँ पर्याप्त मात्रा मे चढ़ानी हों तो उसका अर्घ्यपात्र के जल से सिंचन कर, उसे अर्पित करे । अर्घ्यपात्रस्थितजल के अतिरिक्त अन्यजल से जो जो पाद्यादिक चढ़ाया जाता है। सैकड़ों विधियों से चढ़ाये जाने पर भी देवता उन पदार्थों को ग्रहण नहीं करते। नवप्रतिपत्तियों से संस्कृत किये, संस्कारित अर्घ्यपात्र में सभी तीर्थ और अमृत निवास करते हैं। अर्घ्यपात्र में स्थित जल से, उपचारों का अभ्युक्षण करके ही चढ़ावे। इसलिए जिन्हें अर्घ्यपात्र में रखकर अर्पित करना उचित नहीं है, उन्हें उस अर्घ्यपात्र में स्थित जल से अभ्युक्षण करके ही निवेदित करें-

पिष्टातकोऽथ कस्तूरी रोचनं कुङ्कुमं तथा ।

गुडः क्षौद्रं पञ्चगव्यं सौषधिगणस्तथा ।।

सिता निर्णेजनं तैलं स्निग्धस्नेहेन तत्तिलाः ।

प्रान्ते तोयमिति प्रोक्तं स्नानीयं कल्पकोविदैः ।।

स्वर्णरत्नोदकं चैव कर्पूराद्यधिवासितम् ।

तैजसैः कांस्यपात्रैर्वा शङ्खैर्वा तन्निवेदयेत् ।।

मण्डले केशरे देयमादित्यप्रतिमासु च ।

शिवलिङ्गे तथा भोगे पीठे देवतनौ तथा ।।

सद्यःस्निग्धे मृन्मये वा सर्पिःसिन्दुरजे तथा ।

श्रीचन्दनप्रतिष्ठे वा लेपयेत् प्रतिमातनौ ।

स्वस्तिकस्थापिते खड्गे स्नापयेद् दर्पणेऽथवा ।।

एवं दद्यात् तु स्नानीयं महादेव्यै विशेषतः ।

रवि विष्णुशिवेभ्यो वा यत्र तत्र प्रपूजने ।।

पूजकः स्नानदानात् तु चिरायुरुपजायते ।

सम्यक् स्नानप्रदानात् तु कल्पान्तं स्वर्गभाग्भवेत् ।।

यदेव दीयते पाद्यं गन्धपुष्पादिकं तथा ।

उपाचारांस्तथा सर्वानर्घ्यपात्राहितैर्जलैः ।।

अमृतीकरणाद्यैस्तु संस्कृतैस्त्वभिषिच्य तैः ।

प्रदद्यादिष्टदेवेभ्यो गृह्णाति च ततः स्वयम् ।।

अर्घ्यपात्राणि तैस्तोयैर्विना यद्विनिवेदनम् ।

दीयते चेष्टदेवेभ्यः सर्वं तन्निष्फलं भवेत् ।।

रागाल्लोभात् प्रमादाद् वा ह्यर्घ्यं पात्रामृतीकृतम् ।

तोयं स्रुतं स्यात् पात्रात् तु पुनः कुर्यात् तदामृतम् ।।

स्वल्पावशेषतोये तु पात्रस्थे ह्यमृतीकृते

तत्रान्यदुदकं दद्यात् तत्तेनैवामृतं भवेत् ।।

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661

बहूनि यदि पुष्पाणि माला वा प्रचुरा यदि ।

दीयन्ते चार्घ्यपात्रस्थैर्जलैः संसिच्य चोत्सृजेत् ।।

अन्यतोयैर्यदुत्सृष्टमर्घ्यपात्रस्थितेतरैः

तन्न गृह्णातीष्टदेवो दत्तं विधिशतैरपि ।।

संस्कृते त्वर्ण्यपात्रे तु नवभिः प्रतिपत्तिभिः ।

तिष्ठन्ति सर्वतीर्थानि सर्वतीर्थानि पीयूषाणि च सर्वतः ।।

तस्मात् तत्र स्थितैस्योयैरभ्युक्ष्योपचारानुत्सृजेत् ।

न योग्यमर्घ्यपात्रेषु निधाय विनिवेदयेत् ।।का०पु०६८/५४-६९)

आदि शंकर वैदिक विद्या संस्थान

दूरभाष: 9044016661